शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं जवाबदेही का विश्लेषणात्मक अध्ययन

IIMT UNIVERSITY
MEERUT

शिक्षासंकाय के अन्तर्गत

शिक्षाशास्त्र में पी0एच0डी0

की उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध की संक्षिप्त रूपरेखा

शोध निर्देशिका

Dr. Shelly Rana

Assistant professor

College of Education

IIMT University Meerut

शोधार्थी

अनिल कुमार सिंह कुशवाहा

नमांकन सं0–IIMTU/1971258

INTRODUCTION

परिचय

आधुनिक दुनिया में ज्ञान, तकनीकी एवं सुचना क्रान्ति के विकास के साथ-साथ सामाजिक मुल्यों एवं मान्यताओं में सदैव बदलाव हुआ है। जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय एवं मनोसामाजिक तथा व्यक्तित्व और जिम्मेदारी संबन्धित समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछुता नही है। प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति तथा नैतिक मुल्यों से सम्पन्न था। जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा प्रदान किया जाता था। मनुष्य मात्र का सम्पुर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। इसके साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक ढ़ाॅचे धार्मिक विचारधाराओं से सिंचित थे। जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति था। उस समय शिक्षक की भूमिका ईश्वर के रुप में विद्यमान था। शिक्षक मोक्ष का मार्ग बताता था जबकि शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग था। समाज के बदलते स्वरूप के साथ-साथ उसकी संस्कृति भी बदलती जा रही है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछुता नही रह गया है। प्राचीन काल में शिक्षक को बहुत अधिक महत्व प्रदान किया जाता था। अध्यापन करना उसका व्यवसाय नही अपितु जीवन का एक पवित्र लक्ष्य था। शिक्षक अपने विषय का विद्वान एवं भौतिक रूप से निर्विकार व्यक्ति होता था। शिक्षा से अपेक्षा किया जाता है कि, शिक्षा से देश का निर्माण व विकास होता है। हमारा देश जो कभी विश्व गुरू था तथा शिक्षा की सभी विधाओं में अग्रणी था। अनेक देशों के विद्यार्थी हमारे विख्यात गुरूकुलों-तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि में अध्ययन करने आते थे। इतिहासकार यह स्वीकारतें है कि विभिन्न विधाओं में हमारा देश अग्रणी था। लेकिन अनेक आक्रान्ताओं ने हमारी शिक्षा व्यवस्था को चैपट कर दिया। शिक्षा के दयनीय अवस्था में पहुॅचाने के कारकों पर विचार किया जाय तो-हमारी शिक्षा व्यवस्था तथा हमारे शिक्षकों की गुणवत्ता एवं

अभिक्षमता और उनके मुल्यों एवं जिम्मेदारी को नष्ट करने में प्रथम भूमिका मुस्लिम आक्रमणकारीयों ने निभायी, जब उन्होंने हमारे गुरूकुलों को लुटा, पुस्तकालयों को अग्नि को समर्पित कर दिया, परन्तु अंग्रेज तो इससे भी दो कदम आगे निकल गये थे। उन्होने तो हमारी उत्कृष्ट शिक्षा की जड़ों पर प्रहार किया। जिसका प्रमाण है लार्ड मैकाले के वे कथन जो उन्होंने फरवरी 1835 ई0 में ब्रिटिश संसद के सामने कहा था कि, ‘‘ मैने भारत के कोने-कोने की यात्रा की है और हमें एक भी ऐसा व्यक्ति नही दिखाई दिया, जो भिखारी हो या चोर हो। मैने इस देश में ऐसी सम्पन्नता देखी, ऐसे उॅचें नैतिक मुल्य देखें कि हमें नहीं लगता की जब तक हम इस देश की रीढ़ की हड्डी न तोड़ दे, तब तक इस देश को जीत पायेंगे। इसकी रीढ़ की हड्डी हैः आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत।’’ मैकाले की शिक्षा नीति जो भारतीयों का मानसिक तथा शरीरिक रुप से गुलाम वर्ग को तैयार किया जाता था। जो 1947ई0 तक यह नीति निर्वाध रुप से जारी रही। उस समय केवल पढ़े-लिखे गुलाम तैयार करने के लिये ही शिक्षा संस्थान और शिक्षकों को तैयार किया जाता था।

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य गुलाम तैयार करना नही है, बल्कि शिक्षा के माध्यम से स्वतन्त्र तथा जिम्मेदार नागरिक व नैतिक मुल्यों से परिपूर्ण मानव का विकास करना है। जिसके लिए यह कि उच्च कोटी के व्यक्तित्व क्षमता, शिक्षण अभिक्षमता, उच्च नैतिक मुल्यों तथा जिम्मेदार शिक्षको की आवश्यकता हैं। अतः शिक्षकों का व्यक्तित्व , उसकी अभिक्षमता तथा जिम्मेदारी का समुचित विकास किया जाना चाहिए। हमारे देश में प्राचीन काल से शिक्षा द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था। उसी प्रकार आज आधुनिक शिक्षा भी बालक के शारीरिक, मानसिक, बौधिक, सामाजिक एवं ज्ञानात्मक विकास पर बल देता है। बालक का सर्वागीण विकास विद्यालय की चारदीवारी के अन्दर सम्भव नहीं है। प्रशिक्षुओं का सर्वागीण विकास तभी सम्भव है, जब उसके व्यक्तित्व, शिक्षण अभिक्षमता तथा शिक्षण के प्रति प्रशिक्षुओ की जिम्मेदारी आदि को ध्यान में रखकर प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। वर्तमान शिक्षा में प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं की शिक्षा में

उनके व्यक्तित्व, शिक्षण अभिक्षमता तथा प्रशिक्षुओ की जवाबदेही का विशेष महत्व है, इस प्रक्रिया में अधिगम कर्ता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रशिक्षणशालाओं में भौतिक सुविधायें, शिक्षक, पाठ्यक्रम एवं संरचना समान होने पर भी प्रशिक्षुओं का परिणाम एक समान प्राप्त नही होता है क्योकि सभी प्रशिक्षुओं का व्यक्तित्व, शिक्षण अभिक्षमता एवं प्रशिक्षुओ की जिम्मेदारी एक समान नही होता है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। मानव अपने प्रकृति और स्वभाव से ही गतिशील प्राणी है। समय के साथ हो रहे परिवर्तनों के प्रति जागरूक न रहने वाला व्यक्ति भविष्य में अपना अस्तित्व खो सकता है। समाज को परिवर्तनशील बनाये रखने का सामथ्र्य शिक्षा में विद्यमान हैं। बेहतर शिक्षा सभी के जीवन को आगे बढ़ाने और सफलता दिलाने के लिए अति आवश्यक हैं। विदेशी काल में शिक्षा सर्वांगीण विकास पर आधारित नहीं थी। परन्तु अब शिक्षा के लक्ष्ययुक्त बनने से विद्यार्थियों में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की रूचि तथा लालसा दिखाई देता है। प्रशिक्षु अपने रूचि, लालसा व लगन एवं व्यक्तित्व के आधार पर अपनी अभिक्षमता एवं जिम्मेदारी और अपने कर्तव्य निष्ठा के साथ आगे बढ़ता हैं। आधुनिक दुनिया में ज्ञान, तकनीकी एवं सुचना क्रान्ति के विकास के साथ-साथ सामाजिक मुल्यों एवं मान्यताओं में सदैव बदलाव होता रहा है एवं भविष्य में होता रहेगा। जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय एवं मनोसामाजिक तथा व्यक्तित्व, नैतिक मुल्यो एवं जिम्मेदारीयों ये सम्बन्धि समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में इन समस्याओं से शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछुता नही है। शिक्षक देश की एक ज्योतिर्मयी मशाल है जो अज्ञान रुपी अंधकार में भटकने वालों का पथ प्रदर्शक होता है। शिक्षक का जीवन एक आदर्श होना चाहिए। प्रशिक्षुओं के जीवन सम्बन्धी गुणों का विकास शिक्षा के साथ-साथ शिक्षकों के व्यक्तित्व के प्रभाव से भी प्रभावित होता है। गुरू जो पहलें ऋषि थे वे अब वर्तमान में शिक्षक बन गये तथा शिष्य जो पुत्र के समान होता था वह अब विद्यार्थी बन गया है, अब प्राचीन काल की निष्ठा आज के विद्यार्थीयो में नही है। अतः वर्तमान समय में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों अपने उद्देश्यो के प्रति निष्ठावान होकर लगनशीलता के साथ निस्वार्थ भाव से अपने-अपने

उत्तरदायित्व का भली प्रकार से निर्वहन नही कर रहे है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास करना है। व्यक्तित्व के परीक्षण का उद्देश्य यह निश्चित करता है कि व्यक्तियों को किस वर्ग 1. अन्तर्मुखी, 2. बहिर्मुखी, 3. उभयमुखी. में रखा जा सकता है। उसके व्यक्तित्व में कौन-कौन से गुण कितनी मात्रा में उपस्थित है। इन गुणों के माध्यम से व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जा सकता है कि प्रशिक्षु एवं शिक्षक का व्यक्तित्व कितना प्रभावपूर्ण है।

राष्ट्र के भावी पीढ़ियों के शिक्षकों का वांछित विकास हेतु प्रशिक्षुओं का समुचित प्रशिक्षण अनिवार्य है भविष्य में शिक्षा के विकास के लिए उपयुक्त शिक्षको का विकास किया जा सके। महाविद्यालयों में प्रशिक्षुओं के अध्ययन स्तर का सीधा सम्बन्ध शिक्षकों की तैयारी एवं प्रशिक्षुओं की जागरूकता व क्रियाशीलता पर निर्भर करता है। प्रशिक्षुओं को तैयार करने का कार्य शिक्षक प्रशिक्षण स्कूलों एवं महाविद्यालयों में किया जाता है। यदि प्रशिक्षण के समय शिक्षकों की तैयारी अच्छे से हो जाय तो निश्चय ही अधिगम का स्तर ऊॅचा किया जा सकता है। शिक्षण एक कला है जिसे सिखना ही प्रशिक्षु का कर्तव्य होता है। किसी भी कला में नवीनता को स्थान न दिया जाय तो वह आकर्षणहीन हो जाता है। शिक्षण वह कला है जो प्रशिक्षुओं को प्रभावित करता है, जिससे प्रशिक्षुओं को अधिक लाभान्वित होने तथा अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने का अवसर प्राप्त होता है। कोई भी अध्यापक अपने शिक्षण को सरल व प्रभावशाली बनाना चाहता है तो उसे प्रशिक्षु के रूप में प्रशिक्षण के दौरान अधिक ध्यान व तत्परता पूर्वक सिखना चाहिए। जिससे प्रशिक्षु अपने अन्दर शिक्षण अभिक्षमता को विकसित कर सकें।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तिगत जीवन हो, सामाजिक हो या राजनीतिक अथवा शैक्षिक हमारे कुछ उत्तरदायित्व है, उत्तरदायित्वों निभाने के लिए हमें कुछ न कुछ लाभ किसी न किसी रुप में मिलता है, दूसरे शब्दों में जो लाभ प्राप्त होता है, उसके बदले में हमारे कुछ दायित्व है, इन दायित्वों को

पुरा करना हमारा कर्तव्य बन जाता है। हम किस प्रकार से इसे निभा सकते है। हम किसी न किसी को अपने द्वारा किये गये कार्य का लेखा-जोखा देते है। अतः हम एक बन्धन में क्रिया करते है। इस क्रिया के बन्धन को किस सीमा तक तथा किस मात्रा तक पुरा करते है, बस यही हमारी जिम्मेदारी होती है।

साहित्य की समीक्षाः-

भारत वर्ष में आजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति आयी है। आज हर गाॅव और गली में विद्यालय की उपस्थिति इसका प्रमाण देता है। प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा देश के विद्यार्थियों को उपलब्ध हैं। आज के अनेक युवा अपने भविष्य को लेकर चिंतित प्रतीत होते है। यही नहीं अध्यापक शिक्षा प्राप्त प्रशिक्षु तो वर्तमान समय में अवसाद ग्रस्त पाये जाते है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु अपने शिक्षण अभिक्षमता का पूर्ण उपयोग नही कर पाता है अथवा प्रशिक्षु के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास शिक्षा के माध्यम नहीं हो पाता हैं। यदि ऐसा है तो इसके लिए शिक्षको की क्षमता व जिम्मेदारी को निर्धारित किया जाना चाहिए।

अनेकों अध्ययन भी इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों पर किए गए है जिनका उल्लेख निम्नलिखित हैं:-

1. **अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर आधारित अध्ययन :-**

(A) देव. सी. तथा गौर नीना 2006 कार्यशील व घरेलु महिलाओं के 14-18 आयु वर्ग के बालक व बालिकाओं के व्यक्तित्व का तुल्नातमक अध्ययन उदयपुर में किया। निष्कर्ष में पाया कि बहिर्मुखी

बालकों की तुलना में अन्तर्मुखी बालकों का सवेगात्मक समायोजन अधिक उत्तम होता हैं। उसके लिए उन्होने सिन्हा एवं सिंह के पत्र का उपयोग किया।

(B) देवी निर्मला 2011 व्यक्तित्व एवं उपलब्धि प्रोत्साहन के मध्य संबधों पर किए गए शोध में पाया कि उपलब्धि प्रोत्साहन का समायोजन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं हैं। बहिर्मुखी का समाज, स्कूल में समायोजन, साधारण समायोजन में धनात्मक सम्बन्ध होता है जबकि अन्तर्मुखी का समाज, स्कूल में ऋणात्मक सम्बन्ध होता है।

(C) कादरी मोहत्मद अकबरूल 2014 डा. सतीश कुमार कालोतरा 2014 ने दसवी कक्षा के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी लड़को के मध्य संबन्धों पर अध्ययन किया। अध्ययन के लिए 50 विद्यार्थियों को चुना। उन्होंने पाया कि बहिर्मुखी एवं शैक्षिक उपलब्धता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। अन्तर्मुखी एवं शैक्षिक उपलब्धता में ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

(D) शिल्पी 2011 ने अपना अध्ययन अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी और उनकी शैक्षिक उपलटिधयों के मध्य किया। उन्होंने ने अपने शोध के लिए रेवारी जिले में काम करने वाली महिलाओं व घरेलु महिलाओं के 20 बच्चों को चुना। निष्कर्ष में पाया कि व्यक्तित्व का प्रभाव परीक्षा में प्राप्त अंको पर पड़ता हैं। यह उनकी शैक्षिक उपलब्धि को निश्चित करता है। काम करने वाली महिलाओं के बच्चे ज्यादा अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

(E) सिंह एन 2011 ने ‘‘अभिभावक पालन पोषण शैली तथा अनुशासन उन्मुकता का अध्ययन’’ शीर्षक पर शोध किया। शोध में पाया कि माता-पिता की पालन-पोषण के स्वरूप तथा अनुशासनात्मक उन्मुकता किशोर बालकों को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। माता-पिता तथा उनके बालको के मध्य सम्बन्ध जितना उत्तम होता है उतना ही बालकों के व्यक्तित्व का विकास उत्तम होता हैं।

2. अध्यापन अभिक्षमता से सम्बन्धित अध्ययन:-

(A) शर्मा मदन लाल 1978 में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बी.एड. छात्राध्यापकों में विकसित होने वाली ‘‘ अध्यापन अभिक्षमताओं का अध्ययन’’ नामक शीषक पर शोध कार्य किया। इसमें निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि, जो छात्राध्यापक शिक्षण समता के तत्व में उच्च है तो वह अन्य तत्वों में भी उच्च पाया गया है। महाविद्यालयों द्वारा छात्राध्यापकों के लिए विचारणीय नियंत्रण एवं नवाचार, आकर्षक कार्यक्रमों से उनके व्यवहार में सार्थक परिवर्तन होता हैं।

(B) उपदेश कुमारी 2002 में वनस्थली विद्यापीठ से उच्च एवं न्युन शिक्षण अभिक्षमताओं के भावी अध्यापक की पहचान एवं व्यवहार प्रतिमान का अध्ययन नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि निम्न शिक्षण अभिक्षमता से युक्त भावी अध्यापक विशेष दण्डात्मक पाये गये। उच्च शिक्षण अभिक्षमताओं से युक्त भावी अध्यापकों में अहं के बचाव के प्रति प्रवीणता होती है। निम्न शिक्षण अभिक्षमता से युक्त भावी अध्यापकों में मैत्री भाव अधिक पाया गया।

(C) सुनिता मिश्रा एवं संजना यादव 2014 ने वित्त पोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का उनकी शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की उच्च व निम्न शिक्षण अभिक्षमता का उनकी शिक्षण दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(D)नीवा दोलेव व शोश 2016 ने इजरायल के शिक्षकों पर सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षको की सांवेगिक बुद्धि दक्षता में वृद्धि हुई तथा उन्होने व्यावसायिक व समुहों में अपने इस व्यवहार को सकारात्मक रूप से परिवर्तित किया।

(E) जनक सिंह 2017 ने शिक्षक प्रशिक्षकों की सांवेगिक बुद्धि का उनकी शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में पुरूषों की तुलना में सांवेगिक बुद्धि अधिक होती है। भावात्मक बुद्धि व शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक सहसंबंध होता हैं।

3. जवाबदेही से संबन्धित अध्ययन:-

A. गंगवार 2010 ने शिक्षको की जवाबदेही के सम्बन्ध में अध्ययन किया और पाया कि पुरूष शिक्षको में स्त्री शिक्षको की तुलना में नैतिक जवाबदेही एवं पेशेगत जवाबदेही का स्तर उच्च है जबकि संविदागत जवाबदेही का स्तर समान है। क्षेत्र तथा प्रबंधन के आधार पर शिक्षको की जवाबदेही के स्तर में सार्थक भिन्नता नहीं हैं।

B. बालू 2001 ने निजी विद्यालयों के शिक्षको की जवाबदेही का अध्ययन किया और पाया कि निजी विद्यालयो में वेतन गुणवत्ता के आधार पर दिया जाता है इस लिए इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक अधिक जवाबदेह होते है।

C. विजयलक्ष्मी, के. एस. 2003 ने महिला शिक्षक प्रशिक्षिकाओं के व्यक्तिगत विकास पर शैक्षिक कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन किया। व्यवसायिक विकास शिक्षण कार्यक्रम से महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं को सशक्त करने हेतु विकसित करना, दृढ़ चयनित व्यक्तिगत गुणों के संदर्भ में अध्ययन के उद्देश्य रखे गये। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं के विभिन्न समूह उनके आक्रमकता, निष्क्रिय स्तर के व्यवहार के सम्बन्ध रखते हैं।

इस प्रकार उपराक्त शोध कार्यो का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अभी तक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापक की शिक्षण अभिक्षमता एवं उनकी शिक्षक जवाबदेही का विश्लेषणात्मक अध्ययन एक साथ नहीं हुआ है। अतः शोधकर्ता को विविध साहित्यों के अध्ययन से अपने शोध की समस्या के चयन में दिशा प्राप्त हुआ। इसी लिए शोधकर्ता ने शिशक्षक

प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं जवाबदेही का विश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रयास किया जायेगा।

शोध का औचित्य-

किसी भी शैक्षिक शोध की शुरूआत एक शोध समस्या की स्पष्ट पहचान से होता है। शोध समस्या को स्पष्ट रूप से पहचान कर उसका उल्लेख करना शोधकर्ता के लिए एक कठिन कार्य होता है। फिर भी वह परिस्थितियों की समझ, अपने अनुभवों एवं पहले किये गये शोधों की समीक्षा करके किसी स्पष्ट तथा ठोस समस्या का निर्धारण कर पाता है। सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि शोध समस्या है क्या? सामान्यतः शोध समस्या एक ऐसी समस्या होती है जिसके द्वारा दो या दो से अधिक चरों के बीच एक प्रश्नात्मक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति होती है।

कर्लिंगर के अनुसार-

‘‘समस्या एक ऐसा प्रश्नात्मक वाक्य या कथन होता है जो प्रश्न करता है दो या दो से अधिक चरों के बीच कैसा सम्बन्ध है, यह देखता है।’’

टाउनसेण्ड के अनुसार-

‘‘समस्या तो समाधान के लिए एक प्रस्तावित प्रश्न है।’’ वास्तव में जब किसी प्रश्न का कोई उत्तर प्राप्त नही होता है तो समस्या उपस्थित हो जाती है।

शोध समस्या की पहचान-

Mc. Guigan के अनुसार, '"एक ;समाधान योग्यद्ध समस्या ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के प्रयोग से दिया जा सकता है।'' इनके अनुसार शोध समस्या की अभिव्यक्ति के तीन कारण है-

1. ज्ञान की कमी-

कोई भी समस्या उस समय स्वयं अभिव्यक्त हो उठेगी जब व्यक्ति का ज्ञान किसी जानकारी की तर्कयुक्त ढ़ंग से व्याख्या न कर सके। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति यद्यपि अपने ज्ञान से परिचित होता है तथा साथ ही वह इस सत्य से भी इन्कार नहीं करता है कि उसके ज्ञान में कुछ कमी है जिसके कारण वह किसी घटना की उचित व्याख्या नही कर पा रहा है। उदाहरण के लिये 'शिक्षण की कौन सी विधि सर्वोत्तम है'? अथवा 'चिकित्सा क्षेत्र में कौन सी चिकित्सा-प्रणाली सर्वश्रेष्ठ है'? आदि प्रश्नों से यह स्पष्ट है कि मनुष्य के ज्ञान में वास्तव में कमी है।

2.विरोधयुक्त परिणाम-

कभी-कभी ऐसा होता है जब किसी एक ही समस्या पर विभिन्न प्रयोगों द्वारा विभिन्न परिणाम निकलते हैं। इस परिणामों में अन्तर के कई कारण हो सकते है, जैसे प्रयोगकर्ता या अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रयोग को ठीक ढ़ंग से न करना या चरों पर पूरी तरह से नियंत्रण न कर पाना आदि प्रयोगकर्ता की ये त्रुटियां भी समस्या अभिव्यक्ति का कारण बन जाती है।

3.किसी तथ्य की व्याख्या-

जब किसी वैज्ञानिक को नया ज्ञान प्राप्त है, तो वह उसे अपने ज्ञान से सम्बन्धित करने का प्रयास करता है। किन्तु वह अपने प्रयास में पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाता, यहाॅ उसका असफल हो जाना ही

समस्या की अभिव्यक्ति करता है। ऐसी परिस्थिति में वह अतिरिक्त जानकारी एकत्रित करता है जिसके द्वारा वह इस नये तथ्य की व्याख्या कर सके।

इस प्रकार शिक्षाशास्त्रियों, समाज वैज्ञानिकों तथा मनोवैज्ञानिकों के विचारों में केवल शब्दावली का ही अन्तर दिखाई देता है अन्यथा इस बात को सभी स्वीकार करते है कि आवश्यकता की संतुष्टि के मार्ग में बाधा ही समस्या है, चाहे यह आवश्यकता जिज्ञासा की संतुष्टि मात्र हो, जो सभी मूलभूत अनुसंधानों का आधार है अथवा किसी उपयोगिता पर आधारित हो।

शोध समस्या कथनः-

"शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं जवाबदेही का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

सम्प्रत्ययों की व्याख्याः-

1. अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी: प्रस्तावित शोध में व्यक्तित्व मापनी परीक्षण के आधार पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी की व्याख्या किया जायेगा।

2. शिक्षण अभिक्षमताः प्रस्तावित शोध में प्रस्तावित शोध में शिक्षण अभिक्षमता मापनी परीक्षण के आधार पर शिक्षण अभिक्षमता की व्याख्या किया जायेगा।

3. सेवारत् अध्यापकों में जवाबदेहीः प्रस्तावित शोध में शिक्षक जवाबदेही मापनी परीक्षण के आधार पर शिक्षक जवाबदेही का व्याख्या किया जायेगा।

4. अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमः बी.एड. कोर्स संचालित करने वाले स्व-वित्तपोषित एवं शासकीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों को लिया जायेगा।

5. सेवारत् अध्यापको: बी.एड. कोर्स में अध्यापन कार्य करने वाले अध्यापकों से है।

शोध कार्य के उद्देश्य:-

शोध विषय पर कार्य करने से पहले यह सुनिश्चित किया जाता है कि इस शोध अध्ययन के उद्देश्य क्या है किसी भी शोध अध्ययन के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनों ही प्रकार के उद्देश्य होते है।

गुटे एवं हाॅट के मतानुसार- सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक उद्देश्य एक दूसरे के विपरित नही है बल्कि एक दूसरे के पुरक है।

शोध अध्ययन हेतु निश्चित उद्देश्य निम्नलिखित है:-

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों के शिक्षण अभिक्षमता एवं जवाबदेही का पता लगाना।

2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों के शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों के जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों के लिंग (महिला/पुरूष), एवं विषय-वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर उनकी शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों के लिंग (महिला/पुरूष), एवं विषय-वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर उनकी शिक्षक जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएें:-

परिकल्पना किसी भी अध्ययन को प्रारम्भ करने से पहले बनायी गई योजना है। ‘‘किसी घटना की व्याख्या करने वाला कोई सुझाव या अलग-अलग प्रतीत होले वाली बहुत सी घटनाओं के आपसी सम्बन्ध की व्याख्या करने वाला कोई तर्क पुर्ण सुझाव परिकल्पना कहलाता हैं। वैज्ञानिक विधि के नियमानुसार आवश्यक है कि कोई भी परिकल्पना परीक्षणीय होनी चाहिये।

सामान्य व्यवहार में परिकल्पना का मतलब किसी अस्थायी विचार से होता है जिसके गुणागुण अभी सुनिश्चित नहीं हो पाये हो। सामान्यतः वैज्ञानिक परिकल्पनाऐं गणितीय मा ॅडल के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। जब कभी परिकल्पनाऐ अच्छी तरह परखने के बाद सुस्थापित हो जाती हैं उनको सिद्धान्त कहा जाता है। इसका प्रयोग मुख्यतः किसी भी समस्या का वैज्ञानिक समाधान ढुढने के लिए किया जाता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्न प्रकार हैं:-

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों के शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी अध्यापकों के शिक्षक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में अन्तर्मुखी अध्यापकों के लिंग (महिला/पुरूष), के आधार पर उनकी शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में अन्तर्मुखी अध्यापकों के लिंग (महिला/पुरूष), के आधार पर उनकी शिक्षक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में बहिर्मुखी अध्यापकों के लिंग (महिला/पुरूष), के आधार पर शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में बहिर्मुखी अध्यापकों के लिंग (महिला/पुरूष), के आधार पर शिक्षक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

7. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में लिंग (महिला/पुरूष) के आधार पर शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में लिंग (महिला/पुरूष) के आधार पर शिक्षक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

9. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों के विषय-वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

10. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों के अन्तर्मुखी अध्यापकों में विषय-वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर उनकी शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

11. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में बहिर्मुखी अध्यापकों में विषय-वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर उनकी शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

12. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में विषय-वर्ग ;कला/विज्ञानद्ध के आधार पर उनकी शिक्षक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

13. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में अन्तर्मुखी अध्यापकों में विषय-वर्ग ; कला/विज्ञानद्ध के आधार पर उनकी शिक्षक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

14. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवारत् अध्यापकों में बहिर्मुखी अध्यापकों में विषय-वर्ग ; कला/विज्ञानद्ध के आधार पर उनकी शिक्षक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त चरो की व्याख्याः-

चरः- वह लक्षण या गुण जिसके अनेक प्रकार के मुल्य हो सकते है।

1. स्वतंत्र चरः- यह वह कारक होता है जिसके प्राभाव का मापन किया जाता है। यह प्रयोगकर्ता के नियंत्रण से बाहर रहता है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापकों का अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी होना स्वतंत्र चर है। जो अन्य चरों को प्रभावित करता है।

2. आश्रित चरः- आश्रित चर वे चर होते है जो स्वतः किसी को प्रभावित नही करता है बल्कि आश्रित चर स्वतंत्र चर से प्रभावित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं शिक्षक जवाबदेही आश्रित चर है।

3. मध्यवर्ती चरः- अनेक ऐसे अर्मूत चर होते है जो स्वतंत्र व आश्रित चर के मध्य क्रियाशील रहते है।

(a) स्वतंत्र चर

1. शिक्षकों का अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी होना।

2. लिंग भेद-महिला और पुरूष वर्ग के प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा।

3. वर्ग भिन्नता- कला एवं विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं का अध्ययन किया जायेगा।

(b) आश्रित चर:-

सेवारत् अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता और शिक्षक जवाबदेही।

शोध विधि:-

वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध का जनसंख्या एवं न्यादर्श:-

शोध में जनसंख्या शब्द का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निरीक्षण से होता है। जनसंख्या की संख्या में सभी प्रकार ;पुरूष, स्त्री, बच्चेद्ध का लेखा-जोखा तैयार किया जाता है। शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है वह सजातीय होते है।

यहाॅ पर प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में बी.एड. कोर्स का संचालन करने वाले महाविद्यालयों के सेवारत् अध्यापकों को सम्मिलित किया जायेगा जो एक जनसंख्या होगी।

अनुसन्धान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा जनसंख्या सम्बन्धि सम्पूर्ण सूचनाओं को दिया जाता है। शोध के निष्कर्षो का सामान्यीकरण वास्तव में न्यादर्श का आकार तथा उसकी प्रविधि पर आधारित होता है। एक शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श से शोध के सामान्यीकरण के बारे में अधिक से अधिक सूचनायें प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत शोध में बी.एड. कोर्स का संचालन करने वाले महाविद्यालयों के 400 सेवारत् अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया जायेगा। जिसमें 50-50 प्रतिशत कला व विज्ञान वर्ग, 50 प्रतिशत महिला वर्ग व 50 प्रतिशत पुरूष वर्ग से जनसंख्या का चयन किया जायेगा।

शोध प्रक्रिया:- प्रस्तावित शोध निम्नलिखित सोपानों के अन्तर्गत सम्पन्न किया जायेगा:-

1. प्रथम सोपान:- सर्वप्रथम गाजीपुर जिले के बी.एड. कोर्स का संचालन करने वाले महाविद्यालयों की सूची प्राप्त कर के तद्नुसार महाविद्यालयों का चयन किया जायेगा।

2. द्वितीय सोपान:- बी.एड. कोर्स का संचालन करने वाले महाविद्यालयों के सेवारत् अध्यापकों की सूची को तैयार किया जायेगा।

3. तृतीय सोपान:- बी.एड. कोर्स का संचालन करने वाले महाविद्यालयों से प्रदत्त संकलन हेतु परीक्षण की तिथि निर्धारित कर महाविद्यालय में परीक्षण प्रशासित किया जायेगा।

4. चतुर्थ सोपान:- परिक्षणों से प्राप्त प्रदत्तों का उनके परिवेशानुसार सारणियाॅ तैयार की जायेगी।

5. पंचम सोपान:- प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूप में प्रस्तुत किया जायेगा।

6. षष्ठम् सोपान:- इस सोपान में उपलब्धियाॅ, निष्कर्ष आधारित सुझाव, शैक्षिक फलितार्थ तथा आगामी अध्ययन हेतु सुझाव प्रस्तुत किया जायेगा।

7. सप्तम् सोपान:- अन्त में शोध सारांश प्रस्तुत किया जायेगा।

शोध उपकरणः-

शोध में प्रयुक्त चरों के मापन हेतु निम्नलिखित प्रमाणित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

1. Introversion extroversion Inventory (अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी सूची) By Dr. P.F. Aziz and Dr. Rekha Gupta
2. TAT (शिक्षण अभिक्षमता मापनी)
3. Teacher's work Accountability Scale (शिक्षक जवाबदेही मापनी) by Dr. Pratibha Sharma.

तथ्य संकलन हेतु साधारण याद्दच्छिक विधि प्रयोग किया जायेगा।

प्रदत्त सांख्यिकी विधिः- प्रस्तुत शोध में आवश्यकता के अनुसार सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त होने वाले कुछ प्रमुख सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा जो निम्नलिखित हैं -

1. मध्यमान
2. मध्यमान विचलन
3. प्रमाणिक विचलन
4. मानक त्रुटि
5. जेड-स्कोर
6. टी-स्कोर, प्रमाणिक स्कोर, पर्सेंटाइल रैंक

7. सहसम्बन्ध आदि

प्रदत्त विश्लेषण विधि:- प्रस्तावित शोध अध्ययन में प्रदत्तों का विश्लेषण गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों आधारों पर किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध की परिसीमाएंे:-

1. प्रस्तावित शोध के लिए उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में बी0एड0 कोर्स हेतु संचालित महाविद्यालयों को सम्मिलित किया जायेगा।

2. प्रस्तावित शोध में व्यक्तित्व मापनी परीक्षण के आधार पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी की व्याख्या की जायेगी।

3. प्रस्तावित शोध में शिक्षण अभिक्षमता मापनी परीक्षण के आधार पर शिक्षण अभिक्षमता की व्याख्या की जायेगी।

4. प्रस्तावित शोध में जवाबदेही मापनी परीक्षण के आधार पर सेवारत् अध्यापकों की जवाबदेही की व्याख्या की जायेगी।

5. बी.एड. कोर्स का संचालन करने वाले महाविद्यालयों के सेवारत् अध्यापकों को सम्मिलित किया जायेगा।

6. केवल हिन्दी भाषा माध्यम सेे बी.एड. प्रशिक्षण कराने वाले महाविद्यालयों को शामिल किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बुक्सः-

1. एडमिन एंड हुसैन टी.;एडिटरद्ध एकाउन्टेविलिटी इन एजुकेशन, इण्टरनेशनल इनसाईक्लोपीडिया आॅफ एजुकेशन परगामौन प्रेस, न्यूयार्क. 1985: 1.
2. माथुर. डा.एस.एस.। अधिगमकर्ता, अधिगम एवं शिक्षण मनोविज्ञान 2017, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. Shrivastava Dr. D. N., Assessment For Learning. 2017 Shri Vinod pustak mandir agra.
4. आलम डा.काजी गौस व अन्य। आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, 1998, मोती लाल बनारसीदास वाराणसी।
5. भट्टाचार्य डा. जी. सी.। अध्यापक शिक्षा, नवीनतम संस्करणः विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. पाठक पी. डी, त्यागी जी. सी. डी.। शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, 2008, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. Sharma R. A. 2014: Educational Research, R.L. Book Dipo Meerut.
8. Sharma R. A. 2012: Essentials Of Educational Technology & Management, R.L. Book Dipo Meerut.
9. कार्टर वी. गुड (1993) डिक्शनरी आॅफ एजुकेशनए न्युयार्कः मैक्ग्रा-हिल बुक कं. एडिशन टोकियो एम. एल. ग्रो हिल कोगाकुशा लि. हाल इक.
10. मुदालियर आयोग ;माध्यमिक शिक्षा आयोगद्धए 1952-1953.
11. राष्ट्ररीय शिक्षा नीति-1986.
12. वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट का सार-2017/18.
13. राष्ट्ररीय ज्ञान आयोग (2005) ण्भारत सरकार, नयी दिल्ली।

14. कपिल एच. के. 2004. अनुसंधान विधियां, भार्गव बुक हाउस आगरा।

15. जयसवाल सीताराम, 1975। व्यक्तित्व मनोविज्ञान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनउ, उत्तर प्रदेश।

16. कौल लोकेश 1998। शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हीउस लिमिटेड।

17. पाठक पी. डी.2009 । शिक्षा मनोविज्ञान, चतुर्थ संशोधित संस्करण 2009, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

जर्नल:-

1. शर्मा शिखा, शर्मा प्रो. अजय कुमार 2019:उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि पर व्यक्तित्व का प्रभाव: अध्ययन, Research Review International Journal of Multidisciplinary, Vol.04, ISSBN:2455-3085(Online), Issue-09, Sep.2019

2. रंगा, प्रो. मधुर मोहन 2016: शैक्षिक जवाबदेही सभी का उत्तरदायित्व, शैक्षिक मंथन ,मासिक पेज 7-9, 1सितम्बर 2016।

3. शर्मा, योगेश्वर प्रसाद व सिंह, डा. सतीश कुमार 2016: माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व;अन्तर्मुखी-बहिर्मुखीद्ध आयामों के सन्दर्भ में अध्ययन, Golden Research Thoughts. ISSN:2231-5063, Vol.-6, Issue-5.

4. शर्मा, डा. प्रतिभा, अंजुम परवीन 2017: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में जवाबदेही का लिंग एवं बोर्ड के सन्दर्भ में तुजनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research 2017;3(9):155-159. ISSN Print:2394-7500.

5. क्ुमार, डा. रमेश, कुमारी विनीता 2018: विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, Vol.XV, Issue No. 1, 2018 ISSN 2230-7540.

6. मिश्रा, डाॅ. ऋषिकेश, चैधरी सरला 2019: हनुमानगढ़ जिले के सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य जवाबदेही पर अध्ययन, International Journal of Applied Research 2019; 5(5):173-175. ISSN:2394-5869

7. शर्मा, कृष्णकान्त, वर्मा कामिनी 2018: माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रक्षिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता व सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन, Periodic Research ISSN:2231-0045 Vol-7, Issue-1, 2018.

8. कुमार, डा. धर्मेन्द्र 2016: स्व-वित्तपोषित एवं शासकीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों कीे कक्षा-शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनत्मक अध्ययन,International Journal of Research in all Subjects in Multi Languages Vol. 4, ISSN:2321-2853. Issue:1, January: 2016.